International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 04, October - December, 2020, pp.69-72

हिन्दी कहानी में संवेदना की नई सम्भावनाएँ

डॉ. श्रीराम बड़कोदिया*

शोध–सार

राजेन्द्र यादव– एक दुनिया समानान्तर में लिखते है कि 'आज का कथा साहित्य जब–जब अपने युग संदर्भों और बोध के साथ मुझे खींचता है तो एक तप जर्जर व्यक्ति मेरे सामने आ खड़ा होता है। एक समानान्तर सृष्टि का निर्माता, दुर्दान्त आत्मविश्वास या डेस्पेरेट हताशा से खोलता अकेला व्यक्ति, इस दुनिया से अलग एक नये भिन्न संसार की परिकल्पना को साकार करने की पीड़ा में आतुर व्यक्ति अपेक्षित शक्ति...।''

हिन्दी कथाकार के सामने रचनात्मक संवेदना की अनुभूति के लिए विश्व आकाश पर लटका एक महायुद्ध, पराधीनता के पश्चात् देश की स्वतंत्रता का तमाम घटनाक्रम, शरणार्थियों, विस्थापितों की समस्याएँ, देश विभाजन की त्रासदी के दंश, भूखे–प्यासे, खून से लथपथ देश से आने वाले जाने वालों की हत्याएं, लोगों की अतीत की जलती चिंताएँ तेजी से विघटित होते जीवन सत्य के रूप में सामने आता हैं।

साहित्यिक संवेदना में समय–समय पर जो बदलाव परिलक्षित होते है वे बदलते हुए जीवन मूल्यों का अनिवार्य परिणाम ही होते है। साहित्यकार का विशिष्ट व्यक्तित्व उसकी संवेदन ग्रहण करने की पद्धति के कारण ही साधारण मनुष्य के व्यक्तिव से अलग पड़ जाता है। इस प्रकार साहित्यकार का जीवन बोध उसकी संवेदनशीलता साहित्य की विशिष्टता का पर्यायवाची तत्व बन जाता है।

युग की करवट बदलने में शिक्षा के सामने जाति बौनी पड़ती है। परिवार, धर्म, जांत–पात, नर–नारी सम्बन्धों का नयापन उभरता है। नारी सुधारात्मक स्थिति में आती है। पीढ़ियों में साहस झलकने लगता है। हंसाजाई अकेला (मार्कण्डेय) कर्मनाशा की हार (शिव प्रसाद सिंह) कर्मठ, त्यागी बूढ़े (मोहन राकेश) देवा की मां (कमलेखा), अकेली, रानी मां का चबूतरा (मन्नू भण्डारी) डिप्टी कलेक्टर (अमरकान्त) पापफेल लंच टाइम (राजेन्द्र यादव) दोपहर का भोजन (अमरकान्त) बिरादरी बाहर (राजेन्द्र यादव) चीचकी दखत (भीष्मसाहनी) चीफ साहब आ रहे है। (हेतु भारद्वाज) वापसी उषा प्रियंवदा, गालेजल का रिश्ता (शानी) आदि में विघटन, संश्लेषण करूणा, बन्धन, प्रतिद्वन्द्व आपसी संबंधों में नयापन, खुलापन, भावनाओं का चिन्तन व्यक्त हुआ है।

प्रस्तावना

संवेदनात्मक अनुभवों के प्रति रचनाकार की जागरूकता में राजेन्द्र यादव – एक दुनिया समानान्तर में लिखते है कि 'आज का कथा साहित्य जब–जब अपने युग संदर्भों और बोध के साथ मुझे खींचता है तो एक तप जर्जर व्यक्ति मेरे सामने आ खड़ा होता है। एक समानान्तर सृष्टि का निर्माता, दुर्दान्त आत्मविश्वास या डेस्पेरेट हताशा से खोलता अकेला व्यक्ति, इस दुनिया से अलग एक नये भिन्न संसार की परिकल्पना को साकार करने की पीड़ा में आतुर व्यक्ति अपेक्षित शक्ति...।''[1]

यह एक रचनाकार की जागरूकता उसके आसपास के संसार को देखकर संवेदनात्मक अनुभवों के कारण।

कहानीकार – रचनात्मक तनावों से गुजरता है। वह अपने ही स्वप्नों स्मृतियों, आवश्यकताओं, दबावों, कुण्ठाओं और दृष्टियों के अनुरूप सृजन लोक का निर्माण करता है।

कहानीकार अपनी कहानियों के माध्यम से अपने सारे संस्कारों और प्रभावों को साथ लेकर संतुलन बनाते हुए एक नया पक्ष सामने रखता है। यह नया पक्ष एक स्वतंत्र सत्ता के रूप में सामने और समानान्तर स्थापित होता जाता है।

[6] सह–आचार्य, हिन्दी विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सांभरलेक, जयपुर, राजस्थान।

कहानीकार द्वारा सृजित इस लोक में वर्तमान, भविष्य भूत का कुरूप सत्य, असंतुलन, भविष्य की चेतावनी या प्रेरणा बनकर सामने उभरता है।

स्वतंत्रता के बाद संवेदनशील कथाकार के चारों और एक ऐसा संसार है जिसमें आन्तरिक घृणा, बेहद नफरत है फिर भी वह उसमें रहने, टूटने और समझौता करने को बाध्य है। वह पूरी संवेदनात्मक ऊर्जा के साथ यथार्थ बोध के नाम पर समाज की घिनौनी तस्वीर सामने रखता है। उसकी असामर्थ्य, पराजय, हताशा का लेखा–जोखा ही उसकी नियति है।

हिन्दी कथाकार के सामने रचनात्मक संवेदना की अनुभूति के लिए विश्व आकाश पर लटका एक महायुद्ध, पराधीनता के पश्चात् देश की स्वतंत्रता का तमाम घटनाक्रम, शरणार्थियों, विस्थापितों की समस्याएं, देश विभाजन की त्रासदी के दंश, भूखे–प्यासे, खून से लथपथ देश से आने वाले जाने वालों की हत्याएं, लोगों की अतीत की जलती चिंताए तेजी से विघटित होते जीवन सत्य के रूप में सामने आता हैं।

रचनाकार के अनुभव लोक में रहने के लिए घर की समस्या के प्रारम्भ होकर, जीविका के साधन की खोज, स्वतंत्र राष्ट्र का व्यक्तित्व, सांस्कृतिक गौरव की खोखलापन, निर्माण की लहर, चुनावी राजनीति की गदंली विसात, भ्रष्टाचार, महंगाई, रिश्वत, कान्फ्रेन्स, कमेटियां, मीटिंगे, उत्थान–पतन की स्थितियों के बीच बाहर भीतर से लड़ने की संघर्ष क्षमता का दौर चलता रहा है।

इस सारे संवेदनात्मक क्षणों का साक्षी हिन्दी का कहानीकार, कमल का नौजवान, माथा झुकाएं, घुटनों पर कोहनियॉ टिकाए, हथेलियों में सिरे पकड़े, हताश–दिशा हारा, पस्त, बीमार बनकर वही रह सकता है। उसकी कलम उसकी संवेदना को मारने नहीं देती। युद्ध से मुंह पीठ फेंरकर एक जाति पीढ़ी का ह्रास, हवस, नारा, देखकर कुछ आहत पीढी में आशा के संचार का दायित्व बोध निभाता है।

कथाकार विवश है देश के नवनिर्माण, उत्थान, प्रगति के साथ सामाजिक, नागरिक, तात्कालिक जिम्मेदारी निभाने के लिए क्यो? केवल उसकी संवेदना के कारण। वह अपने अनुभव लोक की जिम्मेदारी से भाग नहीं सकता उसे असलियत को सामने लाना है अपनी कहानियों के माध्यम से जिसमे यातनाएं है, जहरीली लहरे है, भीतरी अकलाहट है, खुर्राट, झूठे, मक्कार, स्वार्थी रिश्वतखोर, अहंकारी, जन लोलुप व्याभिचारी लोगों के राज है तो दूसरी तरफ सरल, ईमानदार, उत्साही प्रतिभावन, महत्वाकांक्षी लोगों की भीड़ है वह नियोजन कार्यालयों के चक्कर लगाती है। मजबूर झेलती है। शंका–आशंका को भोगती है। फिर भी एक उजले दिन की प्रतीक्षा करती है। कहानीकार का युग सत्य–संसार को बौना शुद्ध, घिनौना क्लीप कहने से समाप्त नहीं हो जाता। वह अभिशप्त स्थितियां को बदलने की जिम्मेदारी निभाने को प्रतिबद्ध हैं, यही उसकी संवेदनात्मक कर्तव्यपरायणता का बोध भी है और निर्वहन भी।

संवेदनात्मक अनुभवों की परस्पर सम्बद्धता–कहानीकार के संवेदनात्मक अनुभवों को लेकर सबसे पहले नाम आता है– मानवता। वह व्यापक मानवता के प्रति प्रतिबद्ध होता है। मरने वालों के लिए रोना मानवता है या मारने वालों हाथ को पकड़ लेना? शब्द के खालीपन और अर्थहीनता को भरना, सुविधाओं और अवसरों पर नजर रखना, बन्धुत्व और समता के दर्शन का व्यापक प्रचार–प्रसार करना, मानव मात्र के लिए हितकर है।

एटम बम– हाइड्रोजन बम, कोबाल्ट बम ये सारी मानवता का सफाया होता है। मानवतावाद का खौलता खौफनाक चेहरा उभरता है। शान्ति के नाम पर हिरोशिमा नागासाकी को भुनना, कोरिया वियतनाम की आबादी को बमों से उड़ा देना, सारी दुनिया को बाजार बनान, प्रजातंत्र अहिंसा के नाम पर हर झूठ फरेब हिंसा भ्रष्टाचार को जापान ठहराना, विदेशी खातों में राजनेताओं का करोड़ों–करोड़ रूपया जमा करनाा व देश में गरीब पर महंगाई करों का बोझ लादते जाना क्यो बेशर्म चालबाजी नहीं है?

गद्दीयों से चिपके जननेता, त्याग, सदाचार, श्रम के भाष्य बखानेत रहे और कुत्सा भेदभाव को अपनाते रहे, जाति और रिश्वत की चक्की में प्रजातंत्र की सांसे टूटती रहे तो बकवस नहीं लगेगी, नैतिकता, मानवता?

तब क्या करें कहानीकार?

सारे शाश्वत सत्यों की बाखिया उधेड़े? शब्दों के खोखले पक्ष को उजागर कर दे? कहानी लोक में सिरजी मानवता की प्रतिमा को खण्डित होने दे? या प्रलोभन के सामने घुटने टेकते को हाँ में हाँ मिलाए? मानवता, राष्ट्रीयता, सत्य, नैतिकता, धर्म प्राचीन गौरव के साथ शुरू कर दे। छलावों का सिलसिला उड़ने दे। चिथड़े उसके बाद किस भूमि पर टिकेगा वह और उसका वर्तमान न आने वाला कल? कहानीकार के पास क्या है बुद्धिजीवी होने का सम्बोधन, एक जिम्मेदार नागरिक का तमगा, मानवता की आत्मा के बचाने के लिए संवेदनाओं कीलाठी जो उज्जवल भविष्य की तरफ आगे बढ़ने का सम्बल बन सकती है। लेखक की आस्था उसका विश्वास, उसकी प्रतिबद्धता सर्वोपरि भी है– रहेगी जो तमाम संवेदनात्मक अनुभवों को परस्पर जोड़ेगी और तैयार करेगी सुन्दर सुमनों के समान शब्दों की माला कहानियों का सृजन हार मानवता के आस्वादन के लिए। कहानीकार के पास–व्यापक लेखनीय संवेदना का कवच है। अनुमति के स्रोत और स्रोतों के खजाने के लिए सृजन के अनमोल क्षण है, उसका हथियार दयनीय नहीं है, महत्वपूर्ण है अतिमहत्व पूर्ण और अतिविशिष्ट भी है। वह मानवीय व्यक्तित्व की गरिमा को अनुभूति की भव्यता के साथ प्रस्तुत करता रहा है और रहेगा। यही है आज का कथाकार।

उसका सृजन लोक कल–आज और आधे वाले कल के लिए परस्पर सम्बद्धता का निर्वाह करता है।

उसकी चेतना वर्तमान के प्रति यथार्थपरक दृष्टिकोण के साथ प्रतिबद्ध है। वह जीवित परिवेश के सार्वजनिक स्पंदन को दर्शान के लिए प्रतिबद्ध है। उसकी अनुभूति किसी प्रमाणिकता की मोहताज भी नहीं है क्योंकि कथाकार ईमानदार है अपने समय और सच के प्रति उसमें साहस है जैसा देखता है, हितकर होता है वैसा ही लिखते का। वह पूरी सच्चाई के साथ संवेदनात्मकता को संश्लिष्ट रूप में प्रस्तुत करता है पूरे प्रभाव के साथ।

आज के दौर के कथाकारों ने अपनी कहानियों में सामाजिक अनुभवों की प्रक्रिया, परिवर्तन, विघटन, मूल्यों का सरण एवं परिवर्तन, सम्बन्धों का बिखराव व गरिमा का नष्ट होना, मनोवैज्ञानिक स्तरों पर यथार्थ को सच्चाई के रूप में स्वीकार करना, महत्वपूर्ण मानकर स्थान दिया है।

मानव जीवन के संदर्भ में सतत प्रवहमान संवेदनात्मक चेतना–हिन्दी कथाकारों ने मानव जीवन के संदर्भ में सतत संवेदनात्मक प्रवहमान चेतना को प्रेमचन्द की पूसकीरात, कफन, शतरंज के खिलाड़ी यशपाल की आधित्य, प्रतिष्ठा का बोझ, पराया, सुख, अज्ञेय की रोज, सेव और देव, जैनेन्द्र की पत्नी, पाजेब मोहन राकेश की मलबे का मालिक इत्यादि कहानियों में अभिव्यक्त किया है। उनकी संवेदना दुःखी लोगों की दयनीय सच्चाई का स्पर्श कर सकी है।

आज की कहानी में व्यक्ति और परिवेश का संबंध परिवार का टूटता ढांचा बनकर संयुक्त परिवार प्रथा के बिखराव में उभरता है। प्रेमचन्द की शांति, बड़े प्यार की बेटी, सवासेर गेहूं, नई राहों की तरफ बढ़ती है।

जैनेन्द्र और यशपाल की कहानियों का नवयुवक अविवाहित, मटकने झेलता, सहानुभूति थकान को मिटाने के लिए सहारा ढूंढता, अशिक्षित नारी के दंश झेलता, कुंठा का शिकार होता है।

युग की करवट बदलने में शिक्षा के सामने जाति बौनी पड़ती है। परिवार, धर्म, जांत–पात, नर–नारी सम्बन्धों का नयापन उभरता है। नारी सुधारात्मक स्थिति में आती है। पीढ़ियों में साहस झलकने लगता है। हंसाजाई अकेला (मार्कण्डेय) कर्मनाशा की हार (शिव प्रसाद सिंह) कर्मठ, त्यागी बूढ़े (मोहन राकेश) देवा की मां (कमलेखा), अकेली, रानी मां का चबूतरा (मन्नू भण्डारी) हिप्टी कलेक्टर (अमरकान्त) पाप फेल लंच टाइम (राजेन्द्र यादव) दोपहर का भोजन (अमरकान्त) बिरादरी बाहर (राजेन्द्र यादव) चीचकीदखत (भीष्म साहनी) चीफ साहब आ रहे है। (हेतु भारद्वाज) वापसी उषा प्रियंवदा, गाले जल का रिश्ता (शानी) आदि में विघटन, संश्लेषण करूणा, बन्धन, प्रतिद्वन्द्व आपसी संबंधों में नयापन, खुलापन, भावनाओं का चिन्तन व्यक्त हुआ है।

नारी सुधार नारी जागरण, नारी की आर्थिक स्वावलम्बन की स्थिति ने नारी के व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान की है। वह स्वतंत्र निर्णय ले सकती है, समाज का नेतृत्व करती है, रचनात्मक भूमिका निभाती है। औद्योगिकरण शहरीकरण, राजनीतिकरण की हवाओं में अपने पैर जमाती है तथा कमजोर नहीं पड़ती है।

टूटना (राजेन्द्र यादव) लिखा नहीं जाता नीली झील (कमलेश्वर) अपरिचित (मोहन राकेश) खोज लवर्स (निर्मल वर्मा), ऊँचाई (मन्नू भण्डारी) परिणय (श्रीकान्त वर्मा), एक पति के नोटस महेन्द्र भल्ला, में अलग–अलग तरह की जिन्दगी बयान होती है।

मानव जीवन की प्रवहमान यात्रा में आज की नयी कथा चेतना नारी पुरूष के सम्बन्धों, संक्रमणों, संकटों, को चित्रित ही नहीं करती बल्कि अलग–अलग स्थितियों में रचनात्मक व निर्णायक भी बनाती है। आज की कहानी अधिक वास्तविक भूमि, अनेक सूक्ष्म संश्लिष्ट धरातलों, विविध संवेदनशील पक्षों से चित्रित नहीं करती है।[2]

अपनी अपनी मानसिकता के प्रकाश में पुरूष और नारी दोनों कथाकार नारी व्यक्तित्व के जितना अधिक निकट जाते है उसे उतना ही जटिल पाते है। उनकी कुठांए अनोखमुखी अनेक स्तरीय है कि विषय गम्भीरता, सहानुभूति संयम की मांग करने लगता है लोकप्रियता व आधुनिकता को दुस्साहस से बचाना वक्त का तकाजा बनता है।

बदबू (शेखर जोशी) सितम्बर की एक शाम (निर्मल वर्मा), संलर (रामकुमार), मकान (प्रयागयुक्त) खोई हुई दिशाएं (कमलेश्वर), छिपकली (अमरकान्त) झाड़ी (श्रीकान्त वर्मा) के अनुभवों की अभिव्यक्ति में बाहरी भीतरी संवेदनाओं के दबावों के कारण संवेदना शक्ति क्षीण होती चली जाती है। बाढ़ भूकम्प, भूतल दुर्घटनाएं, हमले कौन नहीं है जिम्मेदार? जिन्दगी की पकड़ छूटती चली जाती है लेकिन फिर भी रूकी हुई जिंदगी पर सबसे अधिक संवेदना से लिखा गया है।[3]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. राजेन्द्र यादव– कहानी स्वरूप व संवेदना, पृ. 199
2. एक दुनिया समानान्तर – डॉ. राजेन्द्र यादव, पृ. 17, 37, 41
3. कहानी की संवेदनशीलता सिद्धांत और प्रयोग – डॉ. भगवान दास वर्मा, प्रथम कानपुर 1972, पृ. 6 प्रस्तावना पृ. 24, 25
4. साहित्य समीक्षा – मुद्राराक्षस, पृ. 51
5. हिन्दी कहानियों की शिल्प विधि का विकास – डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल
6. हिन्दी कहानी बदलते प्रतिमान – डॉ. रघुवर दयाल
7. आठवें दशक की हिन्दी कहानी में जीवन मूल्य – रमेश देशमूख
8. हिन्दी कहानी की भूमिका – डॉ. चन्द्रेश्वर वर्मा
9. हिन्दी कहानी का विकास – डॉ. देवेश कुमार

❖◆❖